14/9/1966 बुधवार प्रातः क्लास

रिकॉर्ड :– मरना तेरी गली में, जीना तेरी गली में.....

ओमशांति! बच्चों ने गीत सुना। जब कोई मरते हैं तो बाप के पास आते हैं। ठीक है ना बच्चे! बाप को बच्चा हुआ। ऐसे नहीं कहते हैं कोई को– माँ को बच्चा हुआ। ना। बाप को बच्चा हुआ। कॉन्ग्रेचुलेशन्स भी बाप को भेजी जाती हैं, बधाइयाँ भी बाप को दी जाती हैं। ठीक है ना बच्चे! अभी तुम बच्चे जानते हो कि हम अभी आत्माएँ(...)। वो तो शरीर के ..., एक शरीर छोड़ करके फिर दूसरे बाप के पास जाते हैं। तो बाप ने समझाया है तुमने 84 बाप किए हैं। बाप कौन–से किए हैं? साकारी बाप किए हुए हैं। हो वास्तव में असुल निराकारी बाप के बच्चे। असुल नसुल तुम्हारा आत्मा है और परमात्मा के बच्चे हो और रहने वाले भी वहीं हो। कहाँ? जहाँ बाप को याद करते हो, जिसको निर्वाणधाम कहते हैं, ये शांतिधाम कहो वा आत्माओं की दुनिया भी कहो। असुल रहने वाले तुम वहाँ के हो। ये जानते हो...। और फिर रहने वाले वहाँ हो, तुम्हारा बाप भी वहाँ रहते हैं। यहाँ आते हो, तुम आ करके लौकिक बाप के बच्चे बनते हो। उनको भूल जाते हो। फिर सुख में तो भूल ही जाते हो, बाप को याद भी नहीं करते हो; क्योंकि ये तुम जानते हो कि सुख में कोई सुमिरण नहीं करते हैं उस बाप का। देखो, सारा बाप के ऊपर है। फिर दुःख में उस बाप को याद करते हो और याद भी आत्मा करती है; क्योंकि आत्मा जब याद करती है तो ऊपर में बुद्धि करती है, जब उस बाप को याद करती है। जब इस बाप को याद करती है तो अभी यहाँ उसकी नीचे बुद्धि रहती है– बाबा, बाबा– ऐसे करती है और जब फिर उनको याद करती है– ओ बाबा! देखो, फर्क रहता है ना बच्ची भक्तिमार्ग। हैं दोनों बाबा। वहाँ भी कहते हैं 'बाबा', उनको भी कहा जाता है 'बाबा'। तो अक्षर राइट 'फादर' ही है। ठीक है ना बच्चे! वो भी फादर, वो भी फादर। इसको यहाँ देखते हैं, जब उस फादर को बुलाती है आत्मा तो वहाँ नज़र करती है। अभी ये बातें आत्मा को मालूम नहीं। अभी बाबा बैठकर समझाते हैं बच्चों को। अभी तुम जानते हो कि हम फिर उस बाबा के बने हैं। हम उस बाबा के थे। वो बाबा आए हुए हैं और हमको अपना बनाया है; परन्तु बाप कहते हैं– हम जो तुमको भेजा था वहाँ से, तब तो तुम पवित्र थे और स्वर्ग में आ करके राजभाग किया था। अभी तुमने 84 जन्म लिया है। ये समझाते हैं। और तो कोई नहीं समझाय सके ना। एक बाप ही समझाय सके। अभी तुमने 84 जन्म लिया है। ठीक! ड्रामा का प्लैन तो तुम बच्चों को समझाया है। अभी याद करते आए हो, अभी दुःखी भी हुए हो और ड्रामा के प्लैन अनुसार ये पुरानी दुनिया खतम भी होनी है, वापस भी तुमको आना है; क्योंकि तुम ये वस्त्र, जिसको चोला कहा जाता है, पहनते–2, जो तुम्हारी आत्मा भी सतोप्रधान थी और तुम्हारा ये शरीर जो है, वो भी सतोप्रधान था, पीछे तुम जानते हो कि आत्मा ही सतोप्रधान से सतो में आई यानी सिलवर एज में आई, फिर तुम्हारा शरीर भी सिलवर एज में आया। साथ में रहते हैं ना, इकट्ठे। पीछे आत्मा सिलवर एज से कापर एज में आई तो तुम्हारा शरीर भी कापर एज में आया। इसको जेवर भी कहा जाता है। जैसा सोना तैसा जेवर। अभी क्या जेवर मिलते हैं? 14 कैरेट। क्या करते हैं? प्योर में वो खाद मिला देते हैं, तो 14 कैरेट हो गया। और जास्ती खाद डालो तो 9 कैरेट हो गया। ठीक है ना बच्चे! देखो

नाम भी बड़े अच्छे रखे हुए हैं और ये बाप बैठ करके समझाते हैं। अभी तुम आ गए हैं एकदम मुलमे का सोना यानी जो आत्माएँ पतित हो गई हैं, तो सोना भी पतित हो गया है, जिसको ऐसे ही कहेंगे। देखो अख़बार में लिखा था कि 14 कैरेट का सोना कोई पसंद नहीं करते हैं, नहीं लेते हैं; क्योंकि वो काला पड़ जाते हैं, खाद पड़ी हुई है। तो काला पड़ जाते हैं ना, इसलिए तुमको भी कहा जाता है– काले पड़ गए हैं, आइरन एज में आ गए हैं। अभी काला सोना, जो खाद पड़ गई है, ये फिर प्योर कैसे बने? ये युक्ति कहाँ से आवे, जो फिर हम आत्माएँ, जो प्योर थीं और हमारा शरीर भी प्योर था, अभी वो प्योर बन करके फिर प्योर शरीर हमको मिलें, जिसको सुंदर भी कहा जाता है, वो कैसे बनें? क्या स्नान करने से? स्नान करने से तो कोई मिलता ही नहीं है कभी भी। तो देखो पुकारते हैं ये स्लोगन्स– हे पतित! ये किसने कहा? आत्मा ने। हे पतित आत्मा को पावन करने वाला! देखो, बुद्धि जाती है वहाँ। ऐसे नहीं बुद्धि जाती है लौकिक बाप के तरफ। नहीं, बुद्धि जाती है वहाँ– हे बाबा! फिर 'बाबा' अक्षर देखो कितना मीठा है, भले भाषाएँ बहुत हो गई हैं; परन्तु 'फादर', 'बाबा' अक्षर बड़ा अच्छा है और भारत में ही बाबा–2 आकर(...)। और कोई जगह में लेंग्वेज ... होने से– पिताश्री फलाना, डाडे को दादा, डाडे को फाफा, पता नहीं क्या कहते हैं; पर असुल भारत में अक्षर ही 'बाबा, फादर'। तो 'बाबा' ही कहते हैं। बच्चे भी देखो बड़े होते हैं ना, बाबा, बाबा, 'बाबा–2, बाबा–2' करते रहते हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो कि हम अभी आत्मअभिमानी बन और बाबा के बने हैं और बाबा से हम फिर से, जो बाबा कहते हैं ना– मैं तुमको स्वर्ग में भेजा था पहले–2 और यहाँ आ करके नया शरीर लिया था। अच्छा, अभी हम आए हैं, फिर तुमको(...)। अभी तुम बच्चों को समझा दिया ना कि बच्चे! और तो कोई नहीं समझाय सके ना ये बात बाप बिगर। तो बाबा, हमेशा 'बाबा–2', अंदर में तुम्हारे पास 'बाबा'। बाबा समझा दिया है कि आत्मा जब नीचे देखती है तो 'बाबा' इनको कहती है। जब कुछ दुःख होता है तो 'बाबा' उनको पुकारती है। हे पिता! पिता कहो, फादर कहो, बात तो एक ही रहती है ना बच्चे। अभी तुम बच्चे जानते हो कि हम उस बाबा(...), बाबा आया हुआ है, तो उनको याद करते रहते हैं– हे बाबा! हम आत्माएँ, जो पतित बन गई हैं, हम पतित को(...), हे बाबा, पतित–पावन आओ; क्योंकि उनकी ड्यूटी है। ड्रामा के अंदर उनका पार्ट है। तभी तो बुलाते हैं ना– ओ पतित–पावन! देखो, सब–2, ऐसे कोई भी नहीं हैं जो नहीं बुलाते हैं। इंगलिश में भी बुलाते हैं। सब लेंग्वेज़िस में कहेंगे– लिबरेटर, हे फलाना आओ। तो ड्रामा के प्लैन अनुसार बच्चों को समझाया गया है– जब पुरानी दुनिया नई होती है तो ज़रूर संगम पर आएँगे। तो अभी तुम बच्चे जानते हो। अभी सब तो नहीं जान सकते हैं ना बच्ची; क्योंकि कोई को भी पता नहीं है। शास्त्रों में अगड़म–बगड़म बहुत लिखा हुआ है; इसलिए कोई नहीं जानते हैं। तुम बच्चों को निश्चय है और अच्छा निश्चय है और जिसको निश्चय है, अरे वो बस बात मत पूछो– बिलवेड मोस्ट, लवली मोस्ट। ये भी ऐसे ही कहते हैं–स्वीट चिल्ड्रेन। वो गाया जाता है ना–स्वीट, स्वीटर, स्वीटेस्ट। अभी स्वीट कौन है? समझा ना! सुनो पहले, स्वीट वास्तव में लौकिक संबंध में पहले नम्बर में स्वीट फादर; क्योंकि जन्म देते हैं। पीछे उनसे ऊपर होते हैं टीचर। समझा ना! अभी भी बाबा कहते हैं ना–टीचर अच्छे होते हैं। ...देखो, गुरु डुबोते हैं। बाप भी

डुबोते हैं। टीचर तो नहीं डुबोते हैं। टीचर तो पढ़ाई पढ़ते(पढ़ाते) हैं। टीचिंग को कहा जाता है– ये नॉलेज इज़ सोर्स ऑफ इन्कम। ठीक है! अच्छा, ये भी नॉलेज, जो तुमको बाप देते हैं, सोर्स ऑफ इन्कम बड़ी भारी। योग और ज्ञान। ज्ञान को कहा जाता है–नॉलेज, योग को कहा है–याद; क्योंकि तुम भूल गए हो उनको जिन्होंने तुमको स्वर्ग का मालिक बनाया था। बरोबर भारत स्वर्ग का मालिक था। मालिक बना है ज़रूर, जब शिवजयंती हुई है, जब शिवबाबा यहाँ आया हुआ है। अभी कैसे आया, अभी तो किसको पता भी नहीं है। है, चित्रों में है। देखो, त्रिमूर्ति– ब्रह्मा,विष्णु,शंकर, शिवबाबा ऊपर में। ब्रह्मा द्वारा स्थापना। अभी लिखा ही नहीं है कि कृष्ण द्वारा स्थापना। तो कृष्ण कैसे राजयोग सिखलाएँगे! गाया ही नहीं है। क्यों –बदली कर दिया है कि कृष्ण राजयोग सिखलाते हैं सतयुग के लिए। सो क्या वो सतयुग स्थापन करने वाला है? तो देखो, झूठ हो गई है ना शास्त्रों में। सतयुग की स्थापना करने वाला तो शिव को कहेंगे, गॉड को कहें, बाबा को कहेंगे। 'बाबा–2' ही कहते हैं ना बच्चे। तो अभी तुम जानते हो कि बाबा ब्रह्मा द्वारा(...), अभी ये तो चित्र बिल्कुल कॉमन है– ब्र०वि०शं०। गाते भी हैं कि ब्रह्मा द्वारा स्थापना। कौन? ये शिव, जिसको करन–करावनहार कहा जाता है, उसका भी तो नाम तो होना चाहिए ना! त्रिमूर्ति ब्रह्मा, बस! उसके ऊपर कोई है नहीं? उनके ऊपर तो हैं ना। ये क्रियेशन हैं ना तीनों। सूक्ष्मवतन की क्रियेशन हैं। वो ऊपर में रहता है क्रियेटर। ये क्रियेशन हैं; क्योंकि इनको आकार है। फिर ये साकार है। इसको ह्युमन क्रियेशन कहा जाता है और सृष्टि भी यही है। उसको सृष्टि नहीं कहेंगे, जो रिपीट होती है। ये रिपीट होती है। ये देखो चक्र भी, ये सृष्टि का चक्र है। कभी भी सूक्ष्मवतन की सृष्टि का चक्र नहीं गाया जाता है। वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी रिपीट मनुष्य कहते हैं। मनुष्य ये जानते हैं कि मनुष्य–सृष्टि ये चक्कर खाती है। सूक्ष्मवतन में नहीं कोई चक्कर होते हैं, न कोई मूलवतन में...। संगमयुग चाहिए, नहीं तो कलहयुग को सतयुग कौन बनावे? कलहयुग है नर्क; सतयुग है स्वर्ग। अभी नर्कवासियों को स्वर्गवासी कौन बनावे? पतित को पावन कौन बनावे? तो जब पतित होते हैं बच्चे, शुरू होता है वाममार्ग तो पतित ही हो जाते हैं; तो पतित जब होते हैं तो पहले दुःख नहीं होता है उनको, ना; क्योंकि उस समय में रजोगुणी हैं। जब तमोगुणी बनते हैं(...), दिन–प्रतिदिन दुख में तो आना है ना। ये मकान, दुनिया पुरानी होनी है। तो जितनी पुरानी इतना ही दुख। जितनी आत्माएँ तमोप्रधान बनेंगी इतना दुख। तभी तो कहते भी हैं ना–ये तो बहुत तमोगुणी बुद्धि है। देखो, कितना क्रोध है इनमें! कितना ये कामी कुत्ता है!...ऐसे कहते हैं ना बच्ची। तो ये बताते हैं ना– ये बहुत तमोगुणी है; ये बहुत सतोगुणी है। ये जैसे देवता के समान है; ये तो जैसे असुर देखते हैं। ऐसे एक/दो को उलाहना भी देके(देते) हैं चलन के ऊपर। अच्छी तरह से कोई चलता है। बोलते हैं– ये तो जैसे देवता है। .....ये तो कुत्ते के माफिक भौंकता है। जभी कोई गुस्सा करता है तो ऐसे कहते हैं। बच्चे भी घर में हुए ना, तभी गुस्सा करते हैं, बाप कहते हैं– कुत्ते के माफिक भौंकते क्यों हो! कहते हैं ना ऐसे और गालियाँ भी देते हैं– ऐ कुत्ते का बच्चा! ऐ गधे का बच्चा! ओ यू ब्लाइंड! सुअर का बच्चा! स्वाइन ब्लाइंड स्वाइन ऐसे भी कहते हैं ना बच्चे। अभी ये तो छी–2 अक्षर बोलते हैं। ये तो जैसे कि अपन को गाली देते हैं। बाप ने समझाया

था ना– कोई सेन्सीबुल बच्चा होता है, अगर उनको कहते हैं– ऐ कुत्ते का बच्चा! तो पहले ही वो बोलेगा– कुत्ता आप हो ना। कुत्ती भी हो, कुत्ता भी हो, तो उनसे कुत्ता ही पैदा होगा ना। तो फिर उसमें फर्क ही क्या हुआ तभी! समझा ना! जैसे बाबा ने कहा था ना– एक जज को, कहा उसने– ऐ गधा! बोला–साहब, हम गधा, तुम गधा नहीं? यानी अभी कोई वो कर सकते हैं जज कि कण्टेम्प्ट ऑफ कोर्ट (अदालत की अवमानना) है। नहीं, वो बोलता है– हमने खुद उनको गधा कहा। तो फिर वो बोलता है–साहब, हम गधा नहीं। हम गधा तो तुम भी गधा। अगर तुम हमको मनुष्य कहेंगे (तो) तुम भी मनुष्य। समझा ना! तो कोई–2 अक्षर ऐसे युक्ति से, जो कोई को भी कहो(...)। अभी ये तो कण्टेम्प्ट है यहाँ। ये सभी जो भी हैं मनुष्य मात्र, साधु,संत,महात्मा, ये कण्टेम्प्ट ऑफ, किसकी? ये कोर्ट, ये गवर्मेंट की। देखो, गवर्मेंट है ना ऊपर में। यानी गॉड फादरली गवर्मेंट है ना। देखो, उनको इन्सल्ट करते हैं ना सभी। तो सभी कहते हैं– हे कुत्ते का बच्चा, ऐ उल्लू का बच्चा! किसकी इन्सल्ट करते हैं? हाईएस्ट; क्योंकि दण्ड भी खाते हैं। हाईएस्ट गवर्मेंट है ना बच्ची। धर्मराज भी तो साथ में है ना। तो ये तो गवर्मेंट है ना, गॉड फादरली गवर्मेंट, जिसके पास धर्मराज भी है। तो देखो, कण्टेम्प्ट करते हैं गॉड फादर की। उनको कहते हैं– तुम कुत्ते का बच्चा है, उल्लू का बच्चा, पत्थर–2 में, ठिक्कर–2 में। तो देखो, कण्टेम्प्ट करते हैं ना। तो कण्टेम्प्ट करने से क्या होता है? उनको ही कहा जाता है–पापात्मा; क्योंकि बाप को गाली देते हैं, बाप को क्या–2 कहते हैं! तो ये बाप आकर समझाते हैं। मनुष्य नहीं समझते हैं। ये बाप ने आ कहा है कि तुम मंदिर में, शिवालय में रहने वाले सो आ करके वैश्यालय में रहते हो। इसलिए तुम जैसे बंदर बन जाते हो। सूरत है तुम्हारी शिकल। शिकल तुम्हारी मनुष्य की है, सीरत तुम्हारी बंदर की है। इसीलिए बंदर और मनुष्य(...)। अक्सर करके बंदरों को बहुत पकड़ कर ले जाते हैं विलायत में। ऑपरेशन करना, ये करना, वो करना, सीखने के लिए बंदर बहुत ले जाते हैं; क्योंकि बंदर की शिकल मनुष्य–से जैसे और फिर शास्त्र में भी, रामायण में भी बहुत लिखा है बंदरों के लिए। बंदरों की पूजा भी होती है। बंदरों की पूजा, अभी ये तो गॉड फादर की पूजा होती है ना बच्चे। तो ये भी बंदरों का जो हेड है हनुमान, ये उनको पूजा करते हैं। तो क्या कहेंगे ऐसे मनुष्यों को! ... बंदर सम्प्रदाय कहेंगे ना। जो बंदरों की पूजा करते हैं सो बंदर सम्प्रदाय। जो देवताओं की पूजा करते हैं(...)। होना चाहिए देवताएँ; परन्तु देवताएँ नहीं हैं; क्योंकि वो दैवीगुण नहीं हैं। इसलिए उनको देवता नहीं कहा जाता है। क्राइस्ट के हैं तो बरोबर वो जानते हैं कि हम क्रिश्चियन लोग हैं, तो क्राइस्ट को पूजते हैं। ये जो भारतवासी हैं, इनको पूजते तो हैं ज़रूर; परन्तु अपन को देवी या देवता नहीं कह सकते हैं यथार्थ रीति से। यूँ तो बहुतों का नाम है– फलानी देवी, फलानी देवी, फलाना देव। समझा ना! ऐसे भी नाम बहुत हैं; परन्तु हैं तो नहीं ना बच्चे। वो तो कहते हैं जा करके– हम पापी हैं, कपटी हैं, नीच हैं...। मैं निर्गुण हारे में कौ गुण नाहीं, आपे तरस परोई। अभी आत्मा कहती किसको है। इनको तो बाबा को कहना चाहिए ना। भाई को तो नहीं कहना चाहिए ना। आपे तरस परोई तो बाबा को(...)। तो ये बाबा को भूल करके भाइयों के पिछाड़ी जाकर लगे हैं। ये सभी देवताएँ हैं, मनुष्य हैं, तो सभी ब्रदर्स हैं ना। ब्रह्मा,विष्णु,शंकर भी तो क्रियेशन हैं ना, ब्रदर्स हैं।

इनसे कुछ मिलने का है क्या? कितनी भी पूजा करो, कितना भी मत्था मारो, इनसे कुछ भी नहीं मिलने का है। देखो, पूजा करते आते हैं इनकी, भाइयों की। ऐसे कहेंगे ना– भाइयों की, ब्रदर्स की पूजा करते आते हैं, नीचे गिरते जाते हैं। अभी फादर आए हुए हैं। तो फादर से इनहेरीटेन्स मिलते हैं ना। तो फादर को कोई फिर जानते नहीं हैं। कोई भी नहीं जानते हैं फादर को। फादर कौन है? देखो, फादर सर्वव्यापी है। फिर फादर अखंड तेजोमय है। अभी कहेंगे– अखंड तेजोमय है। अरे भई, फादर का नाम? नाम–रूप से न्यारा है। अरे, ये जो तुम कहते हो– अखंड ज्योति स्वरूप है, तो स्वरूप हुआ ना! पीछे क्यों कहते हो कि उनका कोई आकार नहीं? तो अनेक बातें करते रहते हैं ना बच्चे। तो कोई को भी कुछ पता नहीं है। न साधु, न संत, न महात्मा, किसको भी पता नहीं रहता है बिल्कुल ही। क्यों? सभी इस समय में तमोप्रधान, बनना ही है लॉ मुजीब। पुरानी दुनिया के आगे हैं ना बच्चे। सभी तमोप्रधान बन, फिर जब बाप आवे तभी सबको सतोप्रधान बनावे। पीछे ये पार्ट तो सबका है ना; परन्तु आत्मा को तो प्योर ज़रूर बनना है ना। बच्ची, सब तो वहाँ के रहने वाले हैं ना– बाप के साथ आत्माएँ। यहाँ पार्ट बजाते हैं। सो तो जानते हो कि सतोप्रधान,सतो,रजो,तमो तो होना ही है पार्ट को। नई से पुरानी दुनिया होनी है ज़रूर। तो अभी तुमको ये जानते हैं कि हम बाबा का बने हैं। बाबा वहाँ से आया हुआ है। हम पुकारते हैं बाबा को। बाबा आते हैं। किसमें आते हैं? अरे पर, ये तो गाया जाता है कि बाबा ब्रह्मा द्वारा, द्वारा। ब्रह्मा तो है ना अपना। वो तो कहते हैं– मैं ब्रह्मा के तन का आधार लेता हूँ। एक भागीरथ, रथ, भाग्यशाली रथ, मैं उनमें स्वार हो करके(...)। रथ को अपनी भी तो आत्मा होगी ना। बिगर आत्मा कोई रथ होता है क्या! तो उनको अपनी भी आत्मा है। कहते भी हैं–भागीरथ। अच्छा, फिर कहते हैं–भागीरथ से गंगा आई। अभी गंगा काहे की आई? गंगा थोड़े ही कोई जटाओं से(...)। गंगा तो बरसात से बनती है या जटाओं से! तो बाप बैठकर समझाते हैं (कि) कितनी तमोप्रधान बुद्धि हो गई है। बड़े–2 विद्वान,आचार्य,पंडित ये कहते क्या हैं! और फिर ये समझते हैं कि भागीरथ ने गंगा लाई जटाओं से। अभी जटाओं से कभी कोई गंगा आती है क्या? ये तो बुद्धि भी कहती है, कोई भी कहे– ये तो बरसात बरसती है या तो पहाड़ों से आता है मीठा पानी। अरे, बच्चों को स्कूल में इतना शिक्षा भी नहीं मिलती है कि भई ये पानी कहाँ से आता है? ये भी शिक्षा नहीं है बच्चों को बच्ची कि बादल जाते हैं, वो खैंचते हैं पानी। वो आ करके वर्षा होती है। वो मीठा पानी ये सागर में। खारा भी है, मीठा भी है। आजकल तो साइंस की ताकत से वो लोग पानी को अलग भी कर सकते हैं, दवाइयों के ज़ोर से। जहाँ–2 पानी की कुछ तकलीफ होती है तो। तो फिर वो भी तो, इनमें भी तो ताकत है ना बच्ची। तो वो लोग भी साइंस की ज़ोर से उनसे पानी भी; पर वो पानी क्या निकाल सकेंगे! कहाँ ये बादल का नैचरल! देखो, ... कितनी बरसात करते हैं। बोडबोडा हो जाती है। पानी कितना आता है, देखो तो! शहरों को भी वो डुबाय देते हैं। पानी कितना आता है! कहाँ से आता है? देखो, ये समुंदर से आता है। ये बादल ले जा करके फिर आ करके वर्षा करते हैं। तो अभी ये तो पानी है, इनका कोई दूसरा नाम नहीं है। कोई इंद्र–विंद्र नहीं है या कोई वो मनुष्य–2 नहीं है। ... नैचरली है, बादल जाते हैं वहाँ। ये नेचर है एक, जो आ करके वर्षा बरसाती है। अभी

ये वर्षा फिर क्या है? ये है ज्ञान की वर्षा, इसको कहा जाता है फिर ज्ञान की वर्षा, नॉलेज। तो इस ज्ञान की वर्षा से क्या होता है? भई, ये जो पतित दुनिया है ना, वो पावन होती है। पानी का कनेक्शन नहीं है। ये गंगा–जमुना, ये तो सतयुग में होती हैं, देखो हैं ना। जमुना नदी में ये कृष्ण, कहते हैं कि खेलपाल करते हैं, ये करते हैं, वो करते हैं। हाँ, ऐसे कोई बातें हैं नहीं कुछ। अरे, वो तो राजाई बच्चे हैं। ये बड़ी हिफाज़त से उनको ... जाता है, बहुत हिफाज़त से; समझा ना!...क्योंकि वो तो फूल हैं ना बच्ची। देखो, फूल को कितना हिफाज़त से (...) जाता है। फूल कैसे अच्छा देखो मीठा लगते हैं और सींघते(सूँघते) हैं। ये काँटे को सींघेंगे(सूँघेंगे) तुम! तो इनको तो कहा ही जाता है ना– ये तो है ही दुनिया इस समय में फॉरेस्ट ऑफ थॉर्न्स। इसलिए देखो नाम भी रखा है ना– इस फॉरेस्ट ऑफ थॉर्न्स को ये जो निराकार बाप है, वो आकर गार्डन ऑफ फ्लावर्स बनाते हैं। तो उसको क्या नाम रख दिया? बबुलनाथ।... बबुल ट्री होते हैं। देखो, बॉम्बे में है ना तुम्हारा। उसको क्या कहते हैं? और है बाबुलनाथ। वास्तव में असुल बाबुलनाथ। फिर बबुल भी कहा जाता। तो बाप बैठकर समझाते हैं वो बाबुलनाथ है। ये बबुल, जो ये काँटे हैं, उनको आते हैं, उनको बैठ करके फ्लावर बनाते हैं; इसलिए उनकी महिमा हो गई है। बबुलनाथ यानी काँटों को फूल बनाने वाला नाथ यानी परमपिता परमात्मा, बाप, बाबा–बाबा। अभी तो तुम बच्चों को तो बिल्कुल अच्छी तरह से– 'बाबा'। बाबा से, तो लव चाहिए बहुत; क्योंकि फर्क बताते हैं। वो बाबा तुमको गटर में डालते हैं; ये बाबा आ करके तुमको गटर से एकदम निकालते हैं 21 जन्म के लिए। वो बाबा...जन्म–ब–जन्म तुमको विकार में ले जाते हैं, पतित बनाते हैं। ये तुम जानते हो। फर्क देखा दोनों बाबा का। वो लौकिक बाबा, वो परलौकिक बाबा। लौकिक बाबा के होते भी परलौकिक बाबा को क्यों याद करते हैं? कोई तो कारण होगा ना बच्ची। आत्मा याद करती है; क्योंकि उस बाप से दुखी हुई है आत्मा। उस बाप को याद करती रहती है। ये खेल है। इसको भक्तिमार्ग में खेल कहा जाता है। अभी जबकि तुम जानते हो कि आधा कल्प याद करते–2 बबुल बाबा तो आते ही हैं। वो तो शिवजयंती मनाते ही हैं बरोबर– शिवबाबा, सभी आत्माओं का, सभी सालिग्रामों का बाबा। अभी तुम बच्चे जानते हो कि अभी हम उस बेहद के बाबा(...), हम लौकिक बाबा के भी हैं और हम बेहद के बाबा के भी हैं। हमारा सम्बंध अभी उनसे भी हैं, उनसे भी हैं; परन्तु वो कहते हैं कि मुझे याद करने से तुम पावन बनेंगे और उनको याद करने से तुम पतित बनेंगे। उसने तुमको पतित बनाया है। वो लौकिक बाबा पतित बनाने वाला है; हम परलौकिक बाबा पावन बनाने वाला है। इस समय जबकि मैं आया हुआ हूँ तो भले वो भी बाप है तुम्हारा, ये बुद्धि जानती है...। अभी आत्मा अंदर वो जानती है– ये हमारा लौकिक बाप है, वो हमारा परलौकिक बाप है। तभी तो पुकारते हैं ना उनको– ये लौकिक बाप है, वो परलौकिक बाप है। भक्तिमार्ग में आत्मा ये अच्छी तरह से जानती है– ये लौकिक बाप है। हे भगवन, हे पिता, ओ फादर! अभी वो फादर क्यों? फादर तो बैठा है ना घर में, फिर वो फादर क्यों कहते हैं? कि दो हो जाते हैं ना बच्ची। एक लौकिक शरीर का जन्म देने वाला। वो तो है ही अविनाशी बाप, उनको याद करते हैं। अभी वो कब आते हैं, कब आकर हैविन स्थापन करते हैं या कब आ करके नई दुनिया रचते हैं? वो शास्त्रों में टाइम

बहुत दे दिया है ना इसको, युगों को। वो बिचारे बिल्कुल घोर अंधियारे में पड़ गए हैं यानी बुद्धि में ही नहीं आता है, वो बाप अभी कुछ आएगा। किसको भी ख्याल में नहीं आता है कि कोई बाबा आएगा हमको पतित से पावन बनाने के लिए। जब कहते रहते हैं– पतित–पावन सीता–राम, पतित–पावन। अरे, आएगा कब, उनसे पूछना चाहिए। वो तो आएँगे कलहयुग के अंत और सतयुग आगे संगम पर। अभी बताओ, कलहयुग में अभी कितने वर्ष हैं? बताओ, किसको पड़ी हुई है जो ये ख्याल में लावे! तो गाया ही जाता है ना– भक्तिमार्ग है ही माना ठोकर मार्ग, दर–2 धक्का खाना, यहाँ खाना। क्यों धक्का खाते हैं? भगवान को पाने के लिए। देखो, ... भी बोलेंगे ना– ये सभी रस्ते हैं भगवान को पाने के लिए। जब बहुत भक्ति कोई करते हैं तो भगवान मिलते हैं। अच्छा, भक्ति फिर हिसाब, सबसे जास्ती भक्ति कौन करते हैं? क्योंकि भक्ति करने वाले...। तो बाप ने आकर हिसाब बताया बच्चों को कि बच्चे, सबसे (...) भक्ति तुम करते हो। फिर भक्ति शुरू ही तुम करते हो; क्योंकि ज्ञान से तुम भक्ति में आते हो। तो पहले–2 भई तुम भक्ति करते हो ना। ...तुमको ही पहले–2 ज्ञान मिलना चाहिए। बड़ा आदमी है, देखो प्राइममिनिस्टर है, उनके बंगले देखो कैसे फर्स्ट क्लास हैं! चीफ मिनिस्टर है या ये प्रेजीडेंट है या राजा है, रानी है, उनके बंगले देखो कैसे फर्स्ट क्लास होते हैं! तो उनके पास गइयाँ भी ऐसी होंगी। उनके पास फर्नीचर भी ऐसे ही होगा। बड़े आदमी के पास बड़ा। तो तुम अभी देखो कितने बड़ा बनते हो! आदमी तो बनते हो, मनुष्य बनते हो ना दैवी गुणों वाले। फिर तुमको देवता कहा जाता है; क्योंकि दैवीगुण हैं तुम्हारे में। इसके पहले आसुरी गुण हैं तुम्हारे में, जिसमें पाँच विकार कहा जाता है। तो जबकि तुम अभी ऊँचे बनते हो, स्वर्ग के मालिक, तो तुमको सब कुछ फर्स्ट क्लास चीज़ चाहिए ना। हर एक चीज़; क्योंकि बहुत बड़े आदमी बनते हो। तो तुम्हारे महल भी तो बड़े चाहिए। ये जानते हो कि बरोबर हीरे–जवाहर के तुम्हारे लिए महल बनते हैं। उसमें क्या होगा फर्नीचर, थोड़ा विचार तो करो। सब कुछ सोने का, जड़त का। ये जो झूला–वूला यहाँ तुम लगाते हो। अभी झूले में झूलते हो ना यहाँ। बाबा बोलते हैं– ये है बेगरी झूला। तुम जानते हो कि अभी कितने झूले में झूलेंगे! अरे, हीरों–जवाहरों से जड़े हुए झूले में झूलेंगे, अगर ब्राह्मण बनेंगे तो; क्योंकि शूद्र बने हुए होंगे तो तुम शूद्र डायरैक्ट शिवबाबा से वर्सा नहीं ले सकते हैं। जब तलक ब्राह्मण न बने, चोटी न बने, ये डायरैक्ट आ करके बाप से ले नहीं सकते हैं; क्योंकि यज्ञ है। ये यज्ञ है ना बच्ची। इसमें ब्राह्मण ज़रूर चाहिए। यज्ञ हमेशा ब्राह्मणों का होता है। तो इसको कहा ही जाता है– रुद्र(...)। उनको ज्ञान का सागर कहा ही जाता है। शिव को रुद्र भी कहा जाता है। तो रुद्र ज्ञान यज्ञ। अभी नाम तो एक ही भला चले ना। भला क्यों उसको 10/20 नाम देते। एक दो– रुद्र ज्ञान यज्ञ। रुद्र, शिव को कहा जाता है। और तो कोई को नहीं कहा जाता है। तो उसने आ करके देखो कि ज्ञान यज्ञ रचा हुआ है; क्योंकि गाया जाता है ना– ज्ञान–भक्ति। भक्ति पूरी होती है तो अभी ज्ञान यज्ञ रचा है। किसने...? भगवान ने रचा। वो तो मनुष्य रचते हैं ना। सो भी कौन मनुष्य रचते हैं? भक्तिमार्ग में। सतयुग में कोई यज्ञ–वज्ञ नहीं रचते हैं। देवताएँ कोई यज्ञ वगैरह नहीं रचते हैं। तो वो यज्ञ रचते रहते हैं; परन्तु ये तो नाम गाया हुआ है ना– रुद्र ज्ञान यज्ञ। राजस्व अश्वमेध अविनाशी रुद्र, अविनाशी बाप को कहा जाता है, रुद्र

ज्ञान यज्ञ। तो ये गाया हुआ है ना। तो ये गाया जाता है ना। होकर गई है चीज़ जो फिर गाई जाती है भक्तिमार्ग में। तो ज़रूर फिर होगी ना। भक्ति तो सदैव तो नहीं चलती रहेगी...। भक्ति और ज्ञान, हाफ एण्ड हाफ। ज्ञान के पीछे भक्ति; भक्ति के पीछे ज्ञान। तो भक्ति में दुर्गति; ज्ञान में सद्गति। भक्ति रात तो वो ज्ञान दिन। ये तो बाबा बहुत अच्छी तरह से समझाते रहते हैं। तो क्या बच्चों को, कितना लव चाहिए– 'बाबा'। कौन–सा बाबा? हमको विश्व का मालिक बनाने वाला बाबा, बिलवेड मोस्ट बाबा। इनसे और कोई भी प्यारी चीज़ हो ही नहीं सकती है दुनिया में; क्योंकि आधाकल्प जिसको हमने याद किया हुआ है और ऐसे ही कहा है कि बाबा, आ करके हमारा ये दुःख हरो और हमको फिर से हमारा सुख दो...। देखो, आत्मा को चीज़ मिली हुई तो है ना तो बोलते हैं। अभी तुम जानते हो कि वो बाबा के हम बने हुए हैं और बाबा कहते हैं तुम अपने गृहस्थ–व्यवहार में(...)। ये बाबा–2 जो सब तुम्हारा है, रहना तो वहाँ है ना। इस बाबा के पास तो नहीं आकर सब रह सकते हैं। इस बाबा के पास कहाँ रह सकते हैं, बताओ! तुम बताओ। इस बाबा के, बाबा कौन–सा? बाबा का नाम क्या? (किसी ने कहा–शिवबाबा) सब शिवबाप के साथ में कहाँ रह सकते हैं? (किसी ने कहा– परमधाम) परमधाम में, यहाँ तो नहीं रह सकेंगे ना। हाँ, परमधाम में रह सकते हो साथ में। यहाँ इतने कैसे रह सकते हैं! ये कोई परमधाम थोड़े ही है। नहीं, यहाँ तो थोड़े रहेंगे ना कि जिनको हमको नॉलेज देनी है। तो नॉलेज भी तो, स्कूल होते हैं, स्कूल कोई इतना लम्बा–चौड़ा थोड़े ही होते हैं और ये नॉलेज, कभी...देखा है यूनिवर्सिटी और उसमें– नॉलेज उससे देते हैं... लाउडस्पीकर से? देखी है कभी? कोई यूनिवर्सिटी लाउडस्पीकर की होती है? बिल्कुल नहीं। ...फलाना–2 तो अनेक कॉलेज हैं ना। ...सबका इम्तिहान अलग–2 होते हैं। फिर सबकी लिस्ट निकलती है। सबका जहाँ–तहाँ, देखो कितने होंगे स्कूल बी०ए० के या एम०ए० के या ये जो–2 भी पढ़ते हो! ढेर हैं ना बच्चे। तो ये भी ढेर होते हैं बच्चे। बाप बैठकर बच्चों को पढ़ाते हैं। बच्चे फिर औरों को पढ़ाते रहते हैं, देखते हो। ओ प्रदर्शनी भी होती है, उनमें भी बहुतों को पढ़ाते। फिर उनको क्या कहना चाहिए! अरे भई, दो बाप हैं। एक तुम्हारा लौकिक, एक परलौकिक। तो तुम कहते हो, गाते हो कि सुख में सिमरण कोई भी नहीं करता है। दुःख में सिमरण करते हो, किसका? बाप का। अभी वो बाप आया हुआ है; क्योंकि फैक्ट्स एंड फिगर्स (प्रूफ–प्रमाण) दिखलाते हो और फिर कहते– बाबा आया हुआ है। ज़रूर होना है; क्योंकि महाभारत की लड़ाई सामने है। उसमें ज़रूर बाप(...); परन्तु बाप तो वो है ना। तो मनुष्य बिचारे सुने हैं महाभारी महाभारत लड़ाई में कृष्ण है, तो अभी कृष्ण कहाँ से आवे? कृष्ण (ने) तो उनको गीता सुनाई नहीं है। तो बिचारे मूँझे पड़े हैं ना बच्ची। तुम जाकर सुनाती हो, तो भी ऐ माइयाँ–वाइयाँ 'कृष्ण–2' पुकारती रहती हैं। उनको पुकारते हो नहीं, गीता शिवबाबा ने गाई है बच्चे। तुम कृष्ण को नहीं पुकारो, शिवबाबा को(...)। नहीं...कृष्ण–कृष्ण–कृष्ण। डांस देखो, रात को सब कृष्ण की ही डान्स करते हैं ना। मोस्ट बिलवेड शिव भी है। मोस्ट बिलवेड कृष्ण भी है। दोनों हैं मोस्ट बिलवेड; परन्तु वो है निराकार, वो है साकार। अभी निराकारी बाप है ना सबका। कृष्ण को तो सभी तो बाप कहेंगे नहीं। हैं दोनों मोस्ट बिलवेड। कम नहीं है; क्योंकि पहला बच्चा है सतयुग का एकदम। विष्णु देखो ना सामने– विश्व का मालिक। तो

विश्व का मालिक, तो जो विश्व का मालिक है बनाने वाला, उसका ही ठहरे। तो है ना, जैसा कृष्ण प्यारा है, तैसा शिव प्यारा है। अभी तुम जज करते हो, दोनों में से प्यारा कौन– कृष्ण या शिव? तो तुम कहेंगे, शिव प्यारा है, वही तो कृष्ण बनाते हैं। कृष्ण क्या करते हैं? कृष्ण कुछ भी नहीं करते हैं। कृष्ण तो... आत्मा तमोप्रधान। उनको बाप आ करके सतोप्रधान कृष्ण बनाते हैं। तो बड़ा कौन हुआ? शिवबाबा हुआ ना। तो गायन तो उनका होना चाहिए ना। अभी वो तो कोई नाच–तमाशा करेगा नहीं; क्योंकि निराकार है। बाकी वो तो नाच–तमाश(...) वो तो बच्चा है। देखो, जैसे बच्ची ने बैठ करके डान्स किया। अभी शिवबाबा क्या डान्स करेंगे! शिवबाबा डान्स करेंगे? तो देखो, शंकर का डान्स दिखलाते हैं कि शंकर भी डान्स करते हैं पार्वती के साथ। तो ये शंकर का डान्स ये लोग बैठ करके ऐसे–ऐसे–ऐसे। ये शंकर का डान्स हो सकता है। ऊँचे–ते–ऊँचा फिर भी शंकर हुआ ना। है नहीं कोई डान्स–वान्स वा और कोई बात ही नहीं है। यहाँ कोई शंकर और पार्वती बैठे नहीं हैं। तो बाबा ने समझाया– बच्चियाँ, तुम सब पार्वतियाँ हो। समझा ना! और ये तुम्हारा अमरनाथ है शिव, जो तुमको कथा सुना रहे हैं। पार्वती भी तुम हो। कोई दूसरी पार्वती है नहीं। ये सब पार्वतियाँ हैं। एक अर्जुन नहीं है। नहीं, तुम सभी अर्जुन हो। पार्वती भी तुम सभी हो। द्रौपदी एक नहीं है, तुम सब द्रौपदियाँ हो। ये सभी दुशासन हैं यानी जो तुमको नगन करते हैं। जिसके लिए अभी सभी पुकारती (हैं)। देखो, पुकारती हैं ना। बहुत माताएँ बहुत बिचारी हैं। हे बाबा, रक्षा करो! हमको नगन करते हैं, हे बाबा, रक्षा करो! हमको नगन करते हैं। ... बाप कहते हैं कि नगन नहीं होना है। फिर गायन भी है– द्रौपदी को नगन करते थे तो उनकी चीर बढ़ाई। देखा है! भई, कितना चीर दिया? 21 चीर। ...कि 21 जन्म तुम नगन नहीं होती हो। ...भगवान को भी जादूगर कहते हैं। जादूगर, रत्नागर, सौदागर। अभी जब ऐसे है, रत्नागर है, जादूगर है, सौदागर है, तो ज़रूर चैतन्य है ना। तो ज़रूर जब सौदागर है, जादूगर है, रत्नागर है, तो भला दिखलाएगा तो ज़रूर ना आ करके। यानी सिर्फ गायन करते रहेंगे, देखेगा कोई नहीं। वो क्या काम का रहा! तो आता है ना बच्ची। वो बोलता है– मैं भी आता हूँ। मुझे बुलाते रहते हैं ना, मैं आता हूँ। अभी देखो तुमको(...)। हम रत्नागर हैं, जादूगर हैं। देखो, मनुष्य को देवता बना देता हूँ, बेगर को प्रिंस बना देता हूँ। अभी ऐसे तो कोई जादूगर देखा, जो बेगर टू प्रिंस! सो भी किसको? ये भारत इतना सारा बिल्कुल...। फिर देखो, ये महाभारत लड़ाई के बाद ये प्रिंस बन जाएगा। यानी टाइम तो लगता है ना स्थापनायें करने में। मकान भी बनना चाहिए ना। तो जादूगर ठहरा ना बच्ची। रत्नागर, ज्ञान का सागर है। ये रत्न हैं। एक–2 रत्न जो बाबा बताते हैं ना, तो वो लाखों का है। इसके ऊपर आखानियाँ हैं। देखो, रूप–बसंत की एक बड़ी आखानी बनी हुई है कि वो रूप और बसंत दो भाई थे। वो आपस में, वो मुख से रत्न निकालते थे, फिर जा करके बेचते थे। तो कोई मूल्य नहीं करता था। एक ने मूल्य किया और बोला– ये तो लाखों का है। तो देखो, तुम्हारे इस ज्ञान रतनों का कोई मूल्य है? कोई जिसको ये लग जावे, बोले–उफ! ये तो हमको बादशाही दे देने वाले हैं। बाकी तो दो जैसे बंदर के माफिक, सुनाओ ... सुन करके ये चले जाते हैं। तुमको तो अभी बहुत अनुभव होता होगा प्रदर्शनी में कि बंदर कौन हैं और देवता कौन बनने वाले हैं; क्योंकि भेंट करते हैं।

देवी–देवताएँ निर्विकारी। अच्छा, विकारी जाते हैं देवी–देवताओं के (आगे)। फिर कहते हैं– आप निर्विकारी हो, हम विकारी हैं, हम पापी हैं। ऐसे गाते हैं ना बच्ची। आपे ही अपन को कहते हैं; परन्तु वो तो गाते रहते हैं– मैं निर्गुण हारे में कौ गुण नाहीं। अभी निर्गुण का अर्थ नहीं समझते कोई। निर्गुण मंडली। अभी निर्गुण मंडली माना उनमें कोई भी गुण नहीं, उसकी भी मंडली। अभी अर्थ कोई समझते नहीं हैं। नाम ठोंक देते हैं–निर्गुण मंडली। अरे निर्गुण मंडली, वो कहते हैं वहाँ– मैं निर्गुण हारे में कौ गुण नाहीं, आपे ही तरस परोई। तो हम बोलेंगे– वो जो निर्गुण मंडली, उनमें कोई गुण नहीं है। तो देखो, निर्गुण मंडली के कितने वो आ करके बनते हैं। उनमें कोई भी गुण नहीं हैं। क्या करते हैं वो लोग? भजन गाते हैं। बस, हैं तो भगत, सो भजन ही गाएँगे। पीछे बच्ची ... जो अक्षर कहते हैं, उनके अर्थ नहीं समझ सकते हैं, तो उनको क्या कहेंगे! बंदर बुद्धि कहेंगे ना। अभी तो तुम सब कुछ समझते हो ना। बाप आए हुए हैं। तुमको बाबा–2 मोस्ट .... कहते हैं– स्वीट चिल्ड्रेन। तो ये तो बच्चे जानते हैं ना कि हम आत्मा को कहते हैं बाबा– स्वीट चिल्ड्रेन। आत्मा को शरीर तो... नहीं तो आत्मा सुनेगी कैसे? शरीर के साथ सुनेगी ना; परन्तु बात करते हैं आत्मा के साथ; क्योंकि परमात्मा है। वो बोलते हैं–मैं शरीर के द्वारा तुमको कहता हूँ– मैं(मेरे) स्वीट रूहानी चिल्ड्रेन, अभी हम आया हुआ हूँ, तुम जो पतित बन गए हो, पावन बनाने के लिए। तो स्वीट चिल्ड्रेन तुम, जो स्वीट फादर है, जिसको तुम भक्तिमार्ग में भी याद करते आते हो, जिसके लिए तुम कहते हो कि हैविनली गॉड फादर है, स्वर्ग की स्था(...), उनको याद करो। नाम रख दिया। बाबा तो उसे बैठ करके अच्छी तरह से हिन्दी भाषा में समझाते हैं। उन्होंने संस्कृत में लिख दिया–मन्मनाभव। उसका अर्थ क्या, बताओ। बाप कहते हैं भगवानुवाच– मुझे याद करो। देह का सभी सम्बंध छोड़ और अपन को आत्मा निश्चय कर मुझे याद करो तो हे बच्चों, हे आत्माओं, तुम्हारे में जो विकर्म, आइरन एज हो गई है ना, वो याद करने से गोल्डन एज बन जाएगी। बस, ये एक उपाय ना। नहीं तो पतित–पावन बाप आ करके क्या करेंगे और? तो लिखा हुआ है शास्त्र– मुझे याद करने से तुम्हारा विकर्म सब भस्म हो जाएगा और तुम पावन आत्मा हो जाएगी। अगर न पावन आत्माएँ, तो सज़ाएँ खाएँगे और वर्सा भी इतना अच्छा नहीं पाएँगे। फिर तुम्हारे लिए है ही ये– जितना हो सके इतना बाप को याद करो। यानी बिलवेड मोस्ट बाप है ना। हमको स्वर्ग की बादशाही देते हैं ना और इसी जन्म में देने का है। तो इस जन्म में हम क्यों नहीं बाबा की श्रीमत पर चलें। एक तो पवित्र रहें, और तो कोई गले में फाँसी तो नहीं डालते हैं ना, वो कोई गंगा में तो धक्का नहीं खिलाते हैं, पहाड़ों पर तो नहीं चढ़ाते हैं, चक्कर तो नहीं लगाते हैं कहाँ! वो तो बैठे रहो घर में। उठो, बैठो, चलो, खाओ, पिओ। एक काम करो, अपन को आत्मा समझ करके जितना हो सके इतना मुझे याद करो, तो मीठे बच्चे, तुम्हारी खाद निकल जावे। अभी जितना जो पुरुषार्थ करेगा इतनी खाद जास्ती निकलेगी। तकलीफ क्या होती है? इतना समय जो देहअभिमानी रहे हो, तो अभी जो तुमको आत्म–अभिमानी बनना होता है ना, ये भूल जाते हैं। घड़ी–2 देहअभिमान आ जाता है। समझा ना! तभी बाबा कहते हैं– अच्छा, दिन में तो देहों को ही देखते हो। रात में तो अपनी खटिया पर बैठे रहते हो ना। वहाँ तो कोई का संग नहीं है ना। तो उस समय

में भला बैठ करके और बाबा को याद करो। अपन को आत्मा समझ करके बाप को याद करो। उस समय में तो कोई देहधारियों को तो देखते ही नहीं हो। ...भक्ति के लिए भी बच्चे वो टाइम अच्छा रहता है, ज्ञान के लिए भी वो अच्छा...; क्योंकि अच्छी बातें हैं। एकदम ठीक देखो– शिवबाबा, ये ब्रह्मा दादा, ये वर्सा मिल रहा है। बाबा कहते हैं ना– देखो, मैं देखता हूँ, उफ! मैं ब्रह्मा सो विष्णु बनूँगा, फिर विष्णु के बाद, 84 जन्म(...) फिर ब्रह्मा बनूँगा। ये घड़ी–2 हमको यहाँ देखता हूँ और फट याद आ जाती है। अच्छा, फिर बाबा आएगा, फिर मुझे विष्णु बनाएगा। ...आधा कल्प के बाद फिर रावण आएगा, फिर मैं पतित बनूँगा। फिर बाबा इसमें प्रवेश करेगा। अभी मैं ये बनूँगा, ये बनूँगा। सामने देखता हूँ, तो ये बनूँगा। तो तुम भी कहते हो– हम भी विष्णुपुरी का मालिक बनेंगे। अच्छा चलो, टोली दो बच्चों को। बृहस्पत निकला ... बृहस्पत की दशा भी कहा जाता है। तो बृहस्पत, वृक्षपति, उसका नाम रखा है– बृहस्पत। बृहस्पत की दशा सबसे अच्छी होती है ना। तो बरोबर वृक्षपति आ करके तुमको बृहस्पत की दशा में ले आते हैं यानी ऊँचे–ते–ऊँची सो भी दैवी बृहस्पत की। वो तो आसुरी होती है ना बृहस्पत की दशा। उसमें भी दशाएँ हैं, उसमें भी दशाएँ हैं। चलो फिर और भी जाकर दासी और चण्डाल बनेंगे तो उनको राहू की दशा बैठी। आएँगे सतयुग में; परन्तु अगर आश्चर्यवत् भागन्ति, सुनन्ति, कथन्ति तो राहू का दशा बैठी ना; परन्तु दैवी कुल में फिर।

मीठे–2, स्वीट, स्वीटेस्ट, स्वीट–स्वीटर–स्वीटेस्ट। अभी हम स्वीटेस्ट कहेंगे उनको जो सर्विस में तत्पर हैं। फिर उसके नम्बर नीचे स्वीटर, फिर स्वीट। स्वीट तो सभी हैं; क्योंकि सबको ही वापस ले जाना है साथ में; परन्तु जो सर्विस में शामिल होते हैं, जिसको खुदाई खिजमत(खिदमत)गार कहा जाता है, खिजमत करेंगे ये अपने भारतवासियों की, उनको ये असुर से देवता बनाएँगे, तो अच्छा पद मिलेगा ऊँचा। है जैसे कि वैश्यालय में रहने वालों को शिवालय में ले जाना है। समझते थोड़े ही हैं कि हम कोई वैश्यालय में हैं। बिल्कुल एक भी नहीं समझते हैं। अच्छा! मीठे–2 स्वीट चिल्ड्रेन प्रति मात–पिता, बाप–दादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग और नमस्ते।